पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 1.01.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

आर्य महासम्मेलन में

दिल्ली से बाहर के आने वाले आर्य जनों से अनुरोध है कि अपनी आने की सूचना व संख्या से अविलम्ब सूचित करें।

दुर्गेश आर्य
प्रबन्धक आवास
फोन: 09868664800, 27016962.

वर्ष-30 अंक-15 पौष-2070 दयानन्दाब्द 190 1 जनवरी से 15 जनवरी 2014 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 1.01.2014, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

87 वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न: शीला दीक्षित ने दी श्रद्धाजंलि

साम्प्रदायिक सौहार्द की मिसाल थे स्वामी श्रद्धानन्द

सोमवार, 23 दिसम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में 3, मोतीलाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार के संस्थापक, मूर्धन्य आर्य संन्यासी ''स्वामी श्रद्धानन्द जी का 87 वां बलिदान दिवस'' समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह में दिल्ली के कौने कौने से सैंकड़ो आर्य प्रतिनिधियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती शीला दीक्षित (पूर्व मुख्यमन्त्री दिल्ली सरकार) ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर देश की एकता और अखण्डता के लिए सब आर्य जन एक जुट हों। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द पूरे देश के लिए श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु है, उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी जैसी महान शिक्षा संस्था की स्थापना की। समारोह के अध्यक्ष ऐमिटी शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष डा.अशोक कुमार चौहान ने कहा कि माननीया श्रीमती शीला दीक्षित जी गत् 13 वर्षो से स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस यहां मना रही है इसके लिए हम आर्य समाज के लोग उनका आभार व्यक्त करते है। इस अवसर पर पूर्व मन्त्री डा. रमाकान्त गोस्वामी, आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी, सुरेन्द्र कोहली, प्रभात शेखर, डा.डी.के.गर्ग, डा.सुनील रहेजा, देवेन्द्र भगत, सुरेश आर्य, रामकुमार सिंह, हरिमोहन शर्मा, गवेन्द्र शास्त्री, यशोवीर आर्य, ब्रह्मप्रकाश मान, अनिल हाण्डा, रामकुमार भगत, महेन्द्र टांक, आचार्य भानूप्रताप शास्त्री, आचार्य सुधांशु, ओम सपरा, सुदेश भगत आदि उपस्थित थे।

संस्कृति व संस्कारो की रक्षा में आर्य समाज की महती भूमिका-डा.हर्षवर्धन

सोमवार, 30 दिसम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में भाजपा विधायक दल के नेता डा. हर्षवर्धन का कृष्ण नगर में भव्य अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। डा.हर्षवर्धन ने कहा कि भारतीय संस्कृति व संस्कारों की रक्षा में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज के भौतिकवादी युग में बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ने की चुनौती है जिसे आर्य जनों ने पूरा करना है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि आज हमारी भारतीय संस्कृति पर चौतरफा आकमण हो रहे है, नैतिक मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं। प्रमुख रूप से आचार्य महेन्द्र भाई, यशोवीर आर्य, विकास गोगिया, कै.अशोक गुलाटी, महेश भार्गव, रामकुमार सिंह, यज्ञवीर चौहान, रणसिंह राणा, आचार्य धूमसिंह शास्त्री, वेदप्रकाश आर्य, अनिल हाण्डा, शिशुपाल आर्य, जवाहर भाटिया, सुनील भाटिया, संजय आर्य, राजीव कोहली आदि उपस्थित थे।

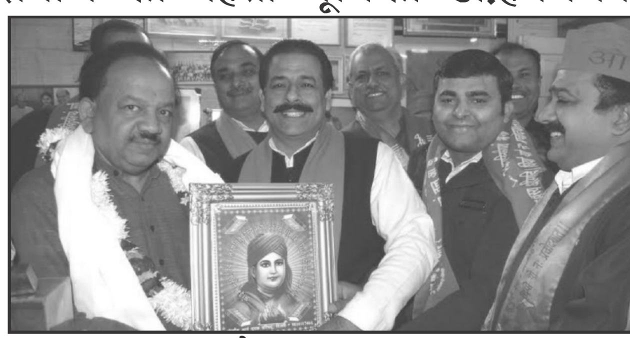

दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न : परिषद् के 520 युवक हुए सम्मिलित

बुधवार, 25 दिसम्बर 2013, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के 87 वें बलिदान दिवस पर श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार से विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य युवकों का नेतृत्व करते डा. अनिल आर्य, कृष्णचन्द पाहुजा, महेन्द्र भाई, यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, अजय आर्य, वेद भगत, सुशील आर्य, रामचन्द्र शर्मा, गवेन्द्र शास्त्री, अनिल हाण्डा आदि व दायें चित्र में परिषद् के आर्य युवक भव्य व्यायाम प्रदर्शन करते हुए संयोजन शिक्षक योगेन्द्र शास्त्री, प्रणवीर आर्य, सौरभ गुप्ता, प्रदीप आर्य, आशीष, विमल, राकेश, गौरव, अरूण आर्य, वीरेश आर्य आदि कर रहे थे।

'भारत माता के सम्मान के रक्षक शहीद ऊधम सिंह' - मनमोहन कुमार आर्य

सृष्टि का आरम्भ तिब्वत से हुआ। ईश्वर ने वेदों का ज्ञान सृष्टि की आदि में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा व उनके माध्यम से सभी मनुष्यों को प्रदान किया। इन मनुष्यों को "आर्य" नाम की संज्ञा दी गई। बाद में गुण, कर्म, स्वभाव व भौगोलिक कारणों से मनुष्यों के अनार्य, दास, राक्षस व नाना नाम पड़े। सारी भूमि खाली पड़ी थी। मनुष्य की उत्पत्ति के कुछ समय बाद सृष्टि के आरम्भिक दिनों में यह आर्य तिब्बत से नीचे उतरे और खाली पड़ी भूमि में आर्यावर्त्त देश बसाया। वर्तमान सृष्टि व मानव सम्वत् 1,96,08,53,113 हवां वर्ष चल रहा है। अब से लगभग 5,100 वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ जिससे कल्पनातीत विनाश होने के कारण धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक सभी प्रकार की वैदिक व्यवस्थायें अवरूद्ध वा समाप्त हो गईं और पतन होता रहा। मध्यकाल आता है जब हमारे देश में अन्ध-विश्वास व कुरीतियों की वृद्धि होती है। यज्ञों में पशुओं की बलि आरम्भ हो गई, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन के अधिकारों से वंचित किया गया। गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई। वैदिक ज्ञान-विज्ञान विस्मृत कर दिया गया। इस काल में अनेक कारणों से बौद्ध व जैन मत अस्तित्व में आये। इनके आचार्यों की मृत्यु के पश्चात मूर्तिपूजा का आरम्भ हुआ। फिर फलित ज्योतिष भी यूनान से भारत में आ गया और इसने भारत के लोगों को भाग्यवादी बनाकर पुरूषार्थ व बल हीन बना डाला। बौद्ध व जैन मतों के पराभव के बाद वेदों के मानने वालों ने भी मूर्ति पूजा आरम्भ कर दी। अज्ञान, स्वार्थ व अन्धानुकरण इसके प्रमुख कारण प्रतीत होते हैं। इनसे समाज कमजोर होता गया। तभी हम अपनी धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक कमजोरियों व मूर्खतापूर्ण निर्णयों के कारण मुगलों के गुलाम हो गये। उसके बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपने बौद्धिक छल-कपट आदि से प्रायः सारे भारत को अपने नियन्त्रण में ले लिया। गुलामी का दौर चला, देशवासियों पर अमानवीय अत्याचारों का दौर भी चलता रहा। ऐसे समय में सन् 1863 में वैदिक ज्ञान विज्ञान से सम्पन्न एक साहसी, वीर, ब्रह्मचर्य के बल से प्रदीप्त, युवा, अभूतपूर्व देशभक्त, इतिहास-भूगोल के ज्ञान व विज्ञान से पूर्ण महर्षि दयानन्द का राष्ट्र की क्षितिज पर अवतरण होता है। वह देशवासियों में वैदिक धर्म के उदात्त विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रचार तो करते ही हैं साथ हि साथ देश की स्वतन्त्रता, स्वराज्य, अतीत में भारत के सर्वत्र चक्रवर्ती राज्य आदि समयानुकूल विचारों का प्रचार करते हुए स्वतन्त्रता के मन्तव्य व विचार को भी जनता पर प्रकट कर उन्हें इसकी प्राप्ति के लिए तैयार करते हैं। यही कारण है कि महादेव गोविन्द रानाडे, उनके शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले, गोखले जी के शिष्य गांधीजी तथा दूसरी ओर क्रान्ति के आद्य आचार्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, उनके शिष्य वीर सावरकर तथा इनके अन्य सभी क्रान्तिकारी शिष्यों को महर्षि दयानन्द का मानस व परम्परा से उत्पन्न पुत्र कह सकते हैं। उन दिनों एक तरफ आजादी की प्राप्ति के लिए प्रयत्न बढ़ रहे थे तो दूसरी ओर उसको दबाने व कुचलने के लिए शासक क्रूर व क्रूरतम कार्य करते थे। उसी का परिणाम पंजाब के अमृतसर में जलियाबाग का काण्ड था जहां बैसाखी 13 अप्रैल, 1919 के दिन शान्तिपूर्वक सभा कर रहे निहत्थे व शान्त लोगों पर अंग्रेज सरकार के अधिकारियों द्वारा गोलियों की बौछार कर एक हजार से अधिक लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। ऊधमसिंह इस सभा में सम्मिलित थे व इसके प्रत्यक्षदर्शी थे। उस समय उनकी आयु 19 वर्ष 4 महीनों की थी। इस अमानुषिक, निर्दयतापूर्वक किये गये जनसंहार ने उनकी आत्मा को अन्दर तक हिला दिया था। उस युवा बालक के हृदय में यह संकल्प जागा कि इस क्रूर कर्म के दोषी को सजा देनी है तभी वह भारत माता के ऋण से उऋण होगें और उससे भविष्य में अन्य शासकों को ऐसा दुस्साहस करने का अवसर नहीं मिलेगा। दिनांक 13 मार्च, 1940 को लन्दन के कैक्स्टन हाल में इस घटना के उत्तरदायी माइकेल ओडायर को अपनी पिस्तौल की गोलियों से धराशायी कर उन्होंने भारत माता पर कुदृष्टि डालने वाले की आंखे सदा-सदा के लिए बन्द कर दीं। 26 दिसम्बर, 2013 को भारत माता के इस वीर बांके महापुरूष का जन्म दिवस है। इस अवसर पर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है एवं उनके निर्भीक व साहसी जीवन पर एक दृष्टि डाल लेना भी समीचीन है। यहां यह भी लिखना अनुपयुक्त न होगा कि जलियांवाला बाग काण्ड की इस घटना के विरोध में कांग्रेस ने यहां 26 दिसम्बर, 1919 को अपना अधिवेशन किया जहां उसके स्वागताध्यक्ष का भार महर्षि दयानन्द के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने ऊपर लिया। उन्होंने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में पढ़कर कांग्रेस के मंच से एक नई परम्परा को जन्म दिया तथा साथ हि कांग्रेस के मंच से दलितोद्धार पर भी कांग्रेस इतिहास में प्रथमवार अपने मार्मिक विचार व्यक्त किए थे।

शहीद ऊधमसिंह का जन्म दिनांक 26 दिसम्बर 1899 को पटियाला रिसायत के सुनाम स्थान पर पिता टहल सिंह के यहां हुआ था। उनके पिता पास के एक रेलवे फाटक की एक चौकी 'उपाल्ल' पर चौकीदार-वाचमैन का काम करते थे। बचपन में इनका नाम शेरसिंह व इनके भाई का नाम मुक्तासिंह था। इनके 7 वर्ष का होने तक इनके माता पिता दोनों का निधन हो गया। 24 अक्तूबर 1907 को यह अपने बड़े भाई के साथ अमृतसर के एक खालसा अनाथालय में भर्ती हुए। यहां सिख धर्म में दीक्षित कर उन्हें ऊधमसिंह व साधू सिंह नाम दिए गये। इसके 10 वर्ष बाद भाई साधूसिंह दिवंगत हो गये। सन् 1918 में मैट्रिक पास कर इन्होंने अनाथाश्रम छोड़ दिया। 13 अप्रैल 1919 को बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में जो अमानवीय घटना घटित हुई, उस सभा में भी आप सम्मिलित थे। यहां हो रही शान्तिपूर्ण सभा में रिजीनाल्ड एडवर्ड हैरी डायर के आदेश से निहत्थे लोगों को गोलियों से भून दिया गया। 1,000 से अधिक लोग अपने जीवन से हाथ धो बैठे। बड़ी संख्या में लोग घायल हुए थे। बाग में एक कुआं था, जो अब भी है, उसमें लोग अपनी जान बचाने को कूद पड़े परन्तु बड़ी संख्या में लोगों के उसमें कूदने से सभी एक दूसरे के नीचे दब कर मर गये। ऊधम सिंह ने घायल लोगों की सहायता की। उन्हें बाहर निकालने में उन्हें सहारा दिया। इस नृशंस काण्ड से दुःखी हो कर उन्होंने 20 वर्ष की आयु में ही इस अमानुषिक काण्ड के खलनायक को सजा देने का संकल्प लिया जो इसके 21 वर्षों बाद 13 मार्च, 1940 को पूरा किया। जलियांवाला बाग की घटना के कुछ समय बाद वह अमेरिका चले गये। अन्याय के विरूद्ध युद्धरत बब्बर अकालियों की गतिविधियों से प्रभावित होकर वह सन् 1920 में भारत लौट आये। अमेरिका से छुपाकर वह एक पिस्तौल भारत लाये थे। अमृतसर में पुलिस द्वारा पकड़े जाने पर उन्हें जेल जाना पड़ा जहां से रिहा होकर सन् 1931 में वह अपने जन्म के गांव सुनाम में आ गये। वहां पुलिस द्वारा परेशान करने पर आप अमृतसर आ गये और यहां दुकान खोल कर दुकानों के नामपट्ट लिखने व पेण्टर का काम किया। उन्हें अपना नाम बदलना उचित लगा तो वह राम मुहम्मद सिंह आजाद बन गये।

सन् 1935 में वह शहीद भगत सिंह व उनकी पार्टी की देशभक्ति के कार्यो से प्रभावित हुए और उन्हें अपना गुरू तुल्य मानने लगे। वह महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के अनुयायी शहीद पं. राम प्रसाद बिस्मिल व उनके देशभक्ति के गीत, गानों, गजलों व तरानों आदि से भी प्रभावित हुए जो उनकी जुवान पर रहा करते थे। पं. राम प्रसाद बिस्मिल क्रान्तिकारियों के रहनुमा थे और भगतसिंह सहित सभी क्रान्तिकारी उनकी गजलों व गीतों को गाया व गुनगुनाया करते थे। उनकी काकोरी काण्ड व फांसी की घटना देशभक्त युवकों के लिए अनन्य उदाहरण थी। यहां से वह कश्मीर जा कर रहे और उसके बाद इंग्लैण्ड आ गये। यहां आकर वह जलियांवाला बाग काण्ड के अवसर पर लिये गये अपने संकल्प को पूरा करने के लिए अवसर की तलाश में लगे रहे। उनका संकल्प पूरा होने का समय आ गया जब वह कैक्सटन हाल में 13 मार्च, 1940 को ईस्ट इण्डिया एसोसियेशन द्वारा रायल सेन्टल एशियन सोसायटी से सम्बन्धित सायं 4:30 बजे आयोजित बैठक में जा पहुंचें। उन्होंने जेब से पिस्तौल निकाल कर पंजाब के भूतपूर्व गवर्नर माइकेल ओडायर **Michael O'Dwyer** पर 5-6 गोलियां बरसाईं और उसे सदा-सदा के लिए मौत की नींद सुला दिया। जलियांवाला बाग काण्ड में जो लोग मरे थे वह निहत्थे व निर्दोष थे और अब जो व्यक्ति मरा वह उन सहस्राधिक लोगों की मृत्यु का दोषी था। इस घटना से एक नया इतिहास निर्मित हुआ जिससे सरदार ऊधम सिंह सदा के लिए अमर हो गये। वताया जाता है कि ऊधमसिंह जी ने दो बार गोलियां चलाई जिससे माईकेल ओडायर भूमि पर गिर पड़े और उनकी मृत्यु हुई। इस घटना में सभा की अध्यक्षता कर रहे भारत राज्य के सचिव मि. जेटलैण्ड घायल हुए। इस घटना के बाद ऊधम सिंह जी ने घटना स्थल से भागने का कोई प्रयास नहीं किया और लोगों को बताया कि उन्होंने देश के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा किया है। ओल्ड बैले के केन्द्रीय क्रिमीनल न्यायालय के न्यायाधीश एटकिन्सन ने 4 जून 1940 को उन्हें मौत की सजा सुनाई। मात्र 1 अप्रैल 1940 से 4 जून 1940 तक 4 दिनों में इस मुकदमें का फैसला कर दिया गया। 31 जुलाई, 1940 के दिन ऊधम सिंह ने लन्दन की पेनटोउविले जेल में फांसी पर झूलकर अपना प्राणोत्सर्ग किया और भारतमाता के वीर अमर पुत्र बन गये। कारावास के दिनों में श्री शिव सिंह जौहल को लिखे उनके पत्रों से पता चलता है कि वह बहुत साहसी तथा हाजिर जवाबी मिजाज वाले व्यक्ति थे। लन्दन में वह स्वयं को राजा जार्ज का मेहमान कहते थे। उनका मानना था कि मृत्यु एक दुल्हन है जिससे उनका विवाह हो रहा है। फांसी के फन्दे तक वह प्रसन्न मुद्रा में पहुंचें जिस प्रकार से पं. राम प्रसाद बिस्मिल और भगत सिंह आदि शहीद पहुंचें थे। अपने मुकदमें की सुनवाई के दिनों में उन्होने इच्छा व्यक्त की थी कि उनके अवशेष भारत भेज दिये जायें जिसे स्वीकार नही किया गया था। सन् 1975 में पंजाब सरकार की प्रेरणा पर भारत सरकार ने ब्रिटिश सरकार से इसके लिए अनुरोध किया जिससे उनकी अस्थियां व अवशेष देश में पहुंचें जिन्हें देश के लाखों लोगों ने एकत्र होकर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की।

जब हम जलियांवाला बाग काण्ड की घटना पर विचार करते हैं तो हमें सन् 1857 में महारानी विक्टोरियां द्वारा की गई घोषणाओं का ध्यान आता है जिसमें उन्होंने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से शासन की बागडोर अपने हाथों में लेकर कहा था कि धर्म, मत, सम्प्रदाय व मजहब के नाम पर किसी भी भारतीय प्रजा के साथ कोई भेदभाव नही किया जायेगा और वह एक माता के समान भारतवासी प्रजा की रक्षा व पालन करेगीं। हमें लगता है कि यदि इस घोषणा का पालन किया जाता तो पं. राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह व इनके सभी साथियों के साथ जो व्यवहार किया गया वह न होता। देश को सन् 1947 में स्वतन्त्रता मिलने तक अंग्रेज भारतवासियों पर जिस प्रकार अत्याचार करते रहे, उनसे उक्त घोषणा का असर उनकी क्रियाओं व कार्यो में दृष्टिगोचर नहीं हुआ। आर्य समाज के संस्थापक इस बात को अच्छी तरह से समझते थे और इसीलिए उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम् समुल्लास में इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया की उक्त घोषाणाओं के उत्तर में लिखा था कि कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर रहित, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय व दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक कभी नहीं हो सकता। सन् 1875 में लिखी गई इन पंक्तियों व 15 अगस्त 1947 को आजादी मिलने तक हम देखते हैं कि अंग्रेजों ने उक्त घोषणा के शब्दों व वाक्यों का पालन नहीं किया अन्यथा जलियांवाला बाग का जघन्य काण्ड हुआ ही न होता। इसके अतिरिक्त यदि माइकेल ओडायर या जनरल डायर ने यह काण्ड किया भी तो इसकी सजा देने के स्थान पर उन्हें पुरूस्कार दिया गया लगता है जिससे यह विदित होता है कि इंसाफ नहीं किया गया। एक ओर पं. रामप्रसाद बिस्मिल व उनके तीन साथियों द्वारा मात्र दस हजार रूपयों की चोरी या लूट के लिए मृत्यु दण्ड दिया जाता है वहीं एक हजार से अधिक निहत्थे व निदोर्ष लोगों की हत्या करने वालों को कोई सजा नहीं मिलती। अतः हमें यहां शासकों व साम्राज्यवादियों की कथनी व करनी में जमीन व आसमान का अन्तर प्रतीत होता है व उनकी न्यायप्रियता पर प्रश्न चिन्ह लगता है। माईकल ओडायर के प्रति ऊधम सिंह को जो करना पड़ा वह इसलिये कि उन्हें उसके किए की सजा नहीं दी गई थी। हमें यह भी लगता है कि ऊधमसिंह को जो सजा दी गई वह उनके अपराध के उपयुक्त न होकर उससे अधिक थी। वह अपराधी तभी होते जब मा. ओडायर को उचित दण्ड दिया गया होता। ऊधमसिंह ने किसी निर्दोष व्यक्ति को तो मारा नहीं अपितु अपने सहस्राधिक भाईयों के हत्यारे अपराधी को मारा क्योंकि उसे उसके कृत्यों का दण्ड नहीं दिया गया था। हम समझते हैं कि अमर शहीद ऊधमसिंह जी ने जो कार्य किया वह पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, सुखदेव, राजगुरू आदि की तरह स्तुत्य है। इस घटना का प्रभाव क्रूर शासकों के भावी व्यवहार व कार्य पर भी असर हुआ होगा और जलियांवाला बाग जैसी योजनायें बनाते हुए व कार्य करते हुए उन्हें ऊधमसिंह अवश्य याद आते रहे होगें। शहीद ऊधम सिंह जी ने जो कार्य किया उससे भारतीयों के साहस, वीरता, शौर्य व देश भक्ति की नई मिसाल कायम हुई। शहीद ऊधम सिंह जी को हमारी कृतज्ञतापूर्ण श्रद्धांजलि।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, दूरभाषः 09412985121

॥ ओ३म् ॥

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 35वें वार्षिकोत्सव पर

सानिध्य : स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी

आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व व डॉ. अशोक कु. चौहान की अध्यक्षता में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2014 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली-34 (निकट कोहाट एनक्लेव मैट्रो स्टेशन)

आर्यो की शोभा यात्रा, शुक्रवार 24 जनवरी, 2014, प्रात: 10 बजे

शोभा यात्रा मार्ग :- रामलीला मैदान से चल कर वाया-बाहरी रिंग रोड, चित्रकूट अपार्टमेन्ट, आर्य समाज विशाखा एनक्लेव, गोपाल मन्दिर रोड, जी.डी.गोयन्का स्कूल, क्यू डी ब्लाक, डी.ए.वी.स्कूल, एन डी ब्लाक, मुनि मायाराम चौक, वैशाली, यू.यू.ब्लाक, पैट्रोल पम्प, टी यू ब्लाक, वी.पी ब्लाक,एम यू ब्लाक,एल यू ब्लाक, के. यू ब्लाक, श्री शिवशक्ति मन्दिर, जे यू ब्लाक,एच यू ब्लाक, महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल, दुर्गा मन्दिर मार्केट, दिगम्बर मन्दिर, एफ 1 यू, गीता आश्रम होते हुए दोपहर 1.30 बजे रामलीला मैदान में समापन ।

संयोजक : सर्वश्री देवेन्द्र भगत, यज्ञवीर चौहान, सोहनलाल आर्य, शिशुपाल आर्य, सुरेश आर्य, संतोष शास्त्री, ओमबीर सिंह, गवेन्द शास्त्री, योगेन्द्र शास्त्री, सौरभ गुप्ता, प्रवीन आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, स्वतंत्र कुकरेजा, ब्र.दीक्षेन्द्र, जोगेन्द्र खट्टर, राजीव आर्य,महेन्द्र टांक

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री, प्रदीप तायल, जितेन्द्र नरुला, ओमप्रकाश नागिया

शुक्रवार 24 जनवरी, 2014

यज्ञ	प्रात: 8.30 से 9.30
विराट शोभा यात्रा	प्रात: 10.00 से 1.30
गौ कथा व वेद सम्मेलन	दोपहर 2.30 से 5.00
द्वारा आचार्य धूमसिंह शास्त्री	
भव्य संगीत संध्या	रात्रि 7.00 से 9.30
द्वारा श्री नरेन्द्र आर्य ''सुमन''	

शनिवार 25 जनवरी, 2014

101 कुण्डीय विराट् यज्ञ	प्रात: 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	प्रात: 10.45 बजे
राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	11.00 से 2.00
आर्य महिला सम्मेलन	2.00 से 5.00
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	5.00 से 6.30
स्वामी दर्शनानन्द शताब्दी समारोह	7.00 से 9.30

रविवार 26 जनवरी, 2014

151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	प्रात: 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	प्रात: 11.00 बजे
राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	11.30 से 2.30
शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन	2.45 से 5.30
कार्यकर्ता सम्मान समारोह	5.30 से 6.00
धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	सांय 6.15 बजे

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

दानी महानुभावों की सेवा में अपील - इस महायज्ञ में उदारतापूर्वक तन-मन-धन से सहयोग दें। ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, घी, सब्जी, मसाले इत्यादि से सहयोग करें। कृपया समस्त धनराशि क्रॉस चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से मुख्य कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

1. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने का समय व अपनी संख्या के बारे में 12 जनवरी, 2014 तक सूचित करने की कृपा करें, जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2. कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु, आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 12 जनवरी तक आरक्षित करवा लें।

प्रात: से रात्रि तक निरन्तर 'ऋषि लंगर' का सुन्दर प्रबन्ध रहेगा

निवेदक

डा० अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामंत्री
दुर्गेश आर्य
राष्ट्रीय मंत्री
राकेश भटनागर
राष्ट्रीय मंत्री
धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

कृष्णचन्द पाहूजा
रामकुमार सिंह
सत्यभूषण आर्य
विश्वनाथ आर्य
यशोवीर आर्य
मनोहरलाल चावला
आनन्दप्रकाश आर्य
रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

आनन्द चौहान
रणसिंह राणा
अरुण बंसल
अविनाश बंसल
सुरेन्द्र गुप्ता
ओमप्रकाश गुप्ता
मुंशीराम सेठी
प्रि० अन्जु महरोत्रा
स्वागत अध्यक्ष

मायाप्रकाश त्यागी
प्रभात शेखर
रवि चड्डा
रामलुभाया महाजन
सत्यप्रकाश आर्य
ओम व प्रमोद सपरा
ब्रह्मप्रकाश मान
बी.बी.तायल
स्वागत समिति

रेखा गुप्ता (पार्षद)
के.एस.यादव
रंजन आनन्द
सुरेन्द्र कोहली
प्रेमपाल शास्त्री
गायत्री मीना
नवीन रहेजा
शशिभूषण मल्होत्रा
स्वागत समिति

आयोजक: सर्वश्री जितेन्द्र डावर,चत्तरसिंह नागर, व्रतपाल भगत, विमला ग्रोवर, सरोज भाटिया, सुरेन्द्र शास्त्री, प्रभा सेठी, अर्चना पुष्करणा,शीला ग्रोवर, कै.अशोक गुलाटी, रचना आहूजा, उर्मिला आर्या, सुमन नागपाल, सुदेश अरोड़ा, सुदर्शन खन्ना, गोबिन्दलाल नागपाल, राजेन्द्र लाम्बा, श्रद्धानन्द शर्मा, सुधांशु भल्ला, सतीश शर्मा, वी.एस.डागर, कृष्णा सपड़ा, अमीरचन्द रखेजा, डॉ.ओमप्रकाश मान, विजयारानी शर्मा, विजेन्द्र आनन्द, प्रकाशवीर बत्रा

आयोजक : केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी०)

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-7, दूरभाष : 9810117464, 9312406810, 9013137070

Email : aryayouth@gmail.com • Website : www.aryayuvakparishad.com

join - http://www.facebook.com/group/aryayouth • aryayouthgroup@yahoogroups.com

आर्य समाज नोएडा का उत्सव व गाजियाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

रविवार, 22 दिसम्बर 2013, आर्य समाज, सैक्टर-33, नोएडा का उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। शिक्षाविद् डा.अशोक कुमार चौहान, ब्रि.चितरंजन सांवत के उद्बोधन हुए। चित्र में बायें से डा.विजयसिंह चौहान, डा.डी.के.गर्ग, डा.अनिल आर्य, स्वामी यज्ञमुनि जी, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा। संचालन डा.जयेन्द्र आचार्य ने किया व प्रधान गायत्री मीना व मंत्री कै. अशोक गुलाटी ने आभार व्यक्त किया। द्वितीय चित्र में आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री सुभाष सिंघल, महामंत्री प्रवीन आर्य व सत्यवीर चौधरी डा.अनिल आर्य को सम्मानित करते हुए। परिषद् के 300 युवकों ने श्री सौरभ गुप्ता के निर्देशन में शोभायात्रा में भाग लिया।

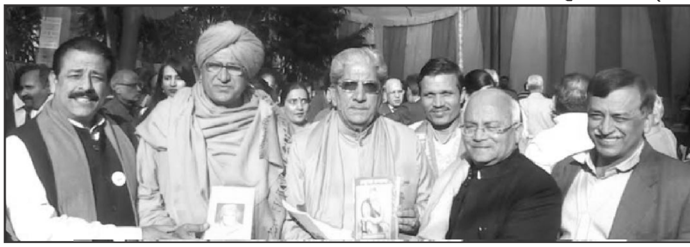

रविवार, 29 दिसम्बर 2013, आर्य नेता वैद्य इन्द्रदेव के निवास अशोक विहार में आयोजित वैदिक सत्संग समारोह में पुस्तक का विमोचन करते स्वामी आर्य वेश जी, डा.वेदप्रताप वैदिक, डा.अनिल आर्य, वैद्य इन्द्रदेव व ओम सपरा। द्वितीय चित्र में आर्यन क्लासेज के वार्षिक आशीर्वाद समारोह आर्य समाज, सूरजमल विहार, पूर्वी दिल्ली में डा.अनिल आर्य को स्मृति चिन्ह व चैक भेंट करते श्री महेश भार्गव, श्री हरीश भार्गव व यशोवीर आर्य।

आर्य समाज आर.के.पुरम व राजनगर पालम का वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न

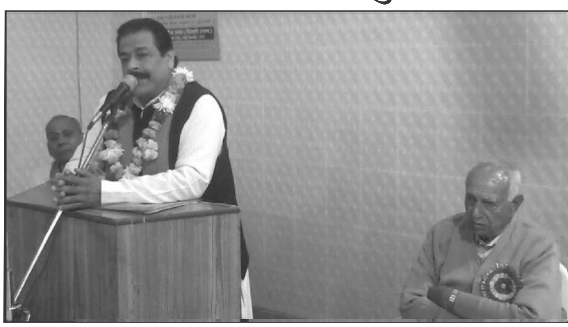
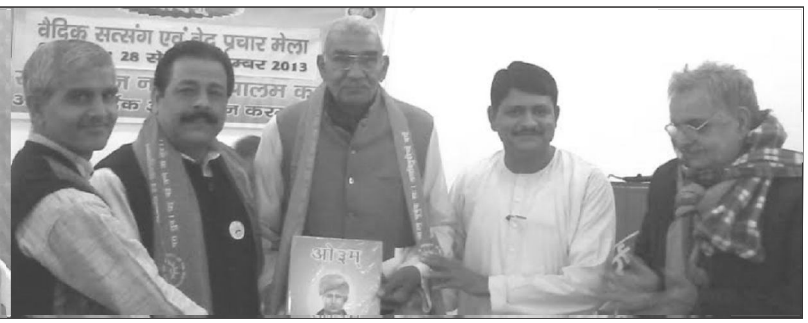

रविवार, 29 दिसम्बर 2013, आर्य समाज, सैक्टर-9, आर.के.पुरम, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य। मंत्री श्री सूर्यपाल सिंह ने सचांलन किया। प्रधान श्री हरबंसलाल कोहली, डा.महेश विद्यालंकार, डा.सुन्दरलाल कथूरिया, श्री विजय गुप्त, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, श्री चतरसिंह नागर, श्री अंकित शास्त्री के उदबोधन हुए। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, राजनगर, पालम, नई दिल्ली में प्रधान श्री भगतसिंह राठी का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, श्री प्रेमकांत बत्रा व मंत्री श्री हंसराज जी।

गुरूकुल गौतम नगर व आर्य समाज श्रीनिवासपुरी का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 22 दिसम्बर 2013 आर्यो के तीर्थ स्थल गुरूकुल गौतम नगर, नई दिल्ली का वार्षिक यज्ञ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। स्वामी प्रणवानन्द जी, डा.रघुवीर वेदालंकार, स्वामी देवव्रत आचार्य, डा.महेश विद्यालंकार, डा. अशोक कुमार चौहान, डा.योगानन्द शास्त्री आदि के उद्बोधन हुए। डा.अनिल आर्य, श्री योगेश मुन्जाल, श्री आनन्द कुमार आदि उपस्थित रहे। संचालन श्री प्रियव्रत शास्त्री ने किया। द्वितीय चित्र-आर्य समाज श्रीनिवासपुरी, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर डा.अनिल आर्य को सम्मानित करते मंत्री श्री सुशील आर्य, श्री रतन कुमार लूथरा व प्रधान श्री ओमप्रकाश वर्मा।

आर्य महासम्मेलन तैयारी हेतु आगामी बैठकें:-

(1) रविवार, 5 जनवरी 2014, प्रातः 11 बजे, आर्य समाज, दीवान हाल, दिल्ली। (2) रविवार, 5 जनवरी 2014, सायं 4 बजे, विजय हाई स्कूल, सिक्का कालोनी, सोनीपत। (3) रविवार, 12 जनवरी 2014, प्रातः 11.30 बजे, आर्य समाज, सूर्य निकेतन, विकास मार्ग, पूर्वी दिल्ली। (4) रविवार, 12 जनवरी 2014, सायं 4 बजे, आर्य समाज, प्रशान्त विहार, दिल्ली। (5) रविवार, 19 जनवरी 2014, प्रातः 11 बजे, आर्य समाज, विकास पुरी बाहरी रिंग रोड, पश्चिमी दिल्ली। (6) रविवार, 19 जनवरी 2014, सायं 4 बजे, आर्य समाज, कालका जी,दक्षिण दिल्ली। कृपया अपने निकट की बैठक में समय पर पहुंचे एवम् एकत्रित दान राशी, खाद्य सामग्री साथ लेते आयें **-महेन्द्र भाई, महामंत्री**

सेवा शिविर के कार्यकर्ता ध्यान दें

आर्य महासम्मेलन में ''सेवा शिविर'' के कार्यकर्ता वीरवार, 23 जनवरी 2014 को दोपहर 1 बजे तक रामलीला मैदान, पीतमपुरा, दिल्ली पहुंच जाये तथा अपनी संख्या से शीघ्र सूचित करें-सौरभ गुप्ता,फोन:09971467978,9968219009.

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेन्द्र भाई के पिता पं. ब्रह्मदत जी शर्मा का गत 19 दिसम्बर 2013 को निधन हो गया ।
2. श्री प्रकाशचन्द्र मलिक, सोनीपत का गत दिनों निधन हो गया।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970